श्री गणेशायनः

गुरू गोरखनाथ जी को बिन्ती

कुमाऊंनी कविता में

सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक—मथुरादत्त बेलवाल

सुपुत्र स्व० प्रेमवल्लभ बेलवाल

ग्राम—दुदुली पो० ओ० कब्याड़

जिला नैनीताल उत्तर प्रदेश

"देवलोक स्थित पूज्य माता–पिता के चरण कमलों में समर्पित"

पत्र व्यवहार का पता -

मथुरादत्त बेलवाल

कुसमखेड़ा पो० ओ० हल्द्वानी जिला नैनीताल उ० प्र०

प्रथम बार सन १९८१ मूल्य २-५०

** गुरु गोरखनाथ विदेह भी व्याप्त हैं **

आज जब विज्ञान और उसकी विविध शाखायें यथा चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञान आदि अपनी उन्नति के चरमोत्कर्ष पर हैं ऐसे समय में भी "असाध्य" शब्द का अस्तिव बना हुआ है। रोग, व्याधि, दुःख, शोक निवारण तथा सुख सन्तोष प्राप्ति हेतु आज भी पारलौकिक शक्तियों के आवाहन की परम्परा यथावत कायम है। विज्ञान जिसका निवारण नहीं कर पाता आवाहन उस संकट को सरलता से समाधान करता है। ढोल, हुड़का, थाली, फूल, काबल के दाने, धूनि-राख, धूप-कपूर, गुड़, घी, विनती अवतरण यही सामग्री है असाध्य को साध्य करने की बस आवश्यकता होती है केवल श्रद्धा और भक्ति की।

कुमाऊं और गढ़वाल जिसे हम लोग उत्तरखण्ड कहते हैं में पारलौकिक शक्तियों को ईष्ट मानकर उनका आवाहन करने का परम्परा रही है यथा भोलानाथ, गंगा-नाथ, गोलू, सैम, एड़ी, हनुमान, देवी आदि। इन्ही ईष्टों में गुरु गोरखनाथ के मानने वालों की भी बड़ी संख्या है।

लगभग एक हजार वर्ष पूर्व वैरागी वेष में अवतरित हुये शिवावतारी गुरू गोरखनाथ की शिष्य परम्परा में आज भी जहां पूरे भारतवर्ष में नाथ सम्प्रदायी साधुओं का प्रभावी वर्ग "अलख" रमाये हुये हैं वही गृहस्त धर्म में भी ईष्ट मानकर उनका आवाहन करने की मान्यता रही है॥

गुरू के बारे में अधिकृत इतिहास की तो मुझे जानकारी नही है जिसका में इस पुस्तक में वर्णन कर सकूं,

केवल लोकमान्यताओं में जितना वर्णन उपलब्ध है उसे में अपनी अधिकतम जानकारी के अनुसार लिपिबद्ध कर रहा हूं । चूंकि लोक साहित्य और लोक रीतियां तथा लोक मान्यताओं का धीरे-२ लोप होता जारहा है लोग उसके मौखिक स्वरूप के कारण उसे भूलते जारहे हैं इस-लिये यह जरूरी हो गया है कि उसका प्रकाश्य स्वरूप उपलब्ध हो और आने वाले दिनों में भी भक्ति और श्रद्धा का वह स्वरुप जो असाध्य को साध्य बना लेता है यथावत कायम रहे । इसी भावना के कारण यह जानते हुये भी कि किसी 'कालपात्र' में न रखे जाने के बावजूद भी किसी भक्त के घर सुरक्षित वस्तु के रुप में गुरु की यह बिनती आने वाले दीर्घ भविष्य तक उपलब्ध रहेगी, मुझ तुच्छ बुद्धि ने इसे लिपि बद्ध कर दिया है ।

गुरु गोरखनाथ का आवाहन पूजन बिनती अवतरण तथा उदघोषण और फल प्राप्ति योग का है जिसमें मन मस्तिक और श्वास तथा नाभिकीय प्रक्रिया को जगरिया केन्द्रित करता है तथा जगरिया भी प्रार्थना और श्रद्धा के साथ गुरु आदेश तथा साज-बाज में अपने को केन्द्रित करता है और आवाहन कर्ता अपने कष्ट का एक मात्र निवारक भी गुरु के रूप में अवतारी को ही मानता है जैसे कि गुरू गोरखनाथ ने ही साक्षात अपने को प्रकट किया हो । यह मनोविज्ञान की एक शाखा परामनोविज्ञान की भी एक प्रविधि हैं जिसमे दिल दिमाग में बैठे भय आशंका, अपराध वृत्ति को उधेड़ देने का यंत्र भी होता है और यह 'मन्त्र तथा तन्त्र' से भी संलग्न है । साधारण मनुष्य गुरु की इस बिनती को रोज दोहराकर भी सर्व

सिद्धि प्रदाता गुरू गोरखनाथ का परोक्ष प्रसाद प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि गुरूजी सदेह न होकर भी विदेह से ही इस धर्म क्षेत्र में सदैव विचरण करते हैं और आर्तजनों की प्रार्थना सुनकर उन्हें यथा श्रद्धा अपनी भक्ति प्रदान करते हैं. हम सब लोग ईष्ट के साथ ही तैंतीस कोटि देवताओं के प्रति आस्थावान हैं. गुरू गोरखनाथ के साथ ही उन सभी देवताओं की स्तुति भी मैंने प्रस्तुत पुस्तक में टूटे-फूटे शब्दों में जोड़ी है।

बस अपनी अनभिज्ञ बुद्धि से इतना ही कह कर मैं पाठकों के पास अपनी यह चौदहवीं लोक पुस्तिका भेज रहा हूं। आशा है पाठक इस भेंट को स्वीकार करेंगे और अपने सुझाव देकर अनुग्रहीत करेंगे

जय गुरू गोरखनाथ

—: आर्त :—

मथुरादत्त बेलवाल

—विषय सूची—

१—अन्दर टाइटिल	१
२—भूमिका	३
३—गुरू गोरखनाथ जी की बिनती कुमाऊंनी कविता	५
४—तर्ज बिनती में	६
५—तर्ज—नाचणि डंगरियों का बर्णन	२४
६—तर्ज—संध्या	२७
७—सभी देवताओं की बिनती	२६

—पुस्तक मिलने के मुख्य प्राप्ति स्थान—

१—अल्मोड़ा शहर—ठा० आनसिंह हरीसिंह एण्ड सन्स लाला बाजार अल्मोड़ा।

२—गोपालदत्त जोशी लाला बाजार, अल्मोड़ा।

३—धर्मानन्द पाठक पुस्तक बिक्रेता मल्लीताल, नैनीताल

४—श्री पनीराम आर्य ग्राम व पो० ऑ० देवीघूरा जिला पिथौरागढ

५—नित्यानन्द बिष्ट प्रकाशक पुस्तक बिक्रेता एवं स्टेशनर्स, रानीखेत

६—त्रिलोक सिंह रावत धभेड़ा कपोली पो. ऑ. धभेड़ा (अल्मोड़ा)

गुरू गोरखनाथ जो कि बिन्तो

कुमाऊंनी कबिता में

गुरु गोरखनाथ तुम सुणिया पुकार ॥
हाथ जोड़ी अजं कनूं तुमारा दरवार
तुमारौ पै ध्यान धारी उठौनों कलम ॥
महीमा तुमारी गुरु जल्म थलम
धन धन गुरु तुम गुरू भगवान ॥
अधिन कै लेखना को दिया बरदान
कलम कौ साथ दिया, गुरू गोरखनाथ ॥
कलम लेखन लागी–मथुरादत्त का हाथ
छाया छ तुमरो गुरू जगत–संसार ॥
गुरु को बर्णन कनों—बुद्धि अनुसार
पढ़ीया सिखिया नथों कमि छ में ग्यान ॥
चरणों में सिर धारी गुरू जो को ध्यान
लेखण कलम लागी—स्याही सरा सर ॥
गुरू की महिमा छ पें–आज घर घर
नानी ठुल्वो परांजि में गुरू की छाया ॥
सत गुरू आदेश पै तुम गूरु भया
सुणि लिया भाई बन्दो अधिन बयान ॥
उत्तराखण्ड पहाड़ में गुरु ज्यू की सान

गुरु भक्ति कठिन छ जैंल करी पाई
नान ठुला भाई बन्दो-सुणि लिया भाई
तपस्या में बैठी जानि जो भक्त खास ॥
नानी ठुली पराणि कें गुरु ज्यु कौ आस
गुरु भक्ति जो करनी गुरु जी का द्वार ॥
मां का पै मक्कंर नानी पुसाका अंत्वार
ग्यान हुंणि तुरु चैणि ध्यान हुँणि धुणि ॥
अघिनं की बात आबा सब लिया सुणि
गूरु छा भगवान तुम मानछ जगत ॥
जोगी भेश धारनी पै गूरु का भक्त
गोरखनाथ का गूरु—मत्स्येन्द्रनाथ ॥
नाथ पन्थी योगी भया गुरु गोरखनाथ
भक्ति लै पें शक्ती हेंछ शक्ती सु साधम ।
गोरखनाथ लै भक्ति करी आज भगवान
चौसट विद्या संजीवनी विद्या पढ़ी भया ॥
कठिन तपस्या करी तब गूरू हैया
पहाड़ों में उत्तराखण्ड ऋषियों की भूमि ।
गां-गाव आज छ पै गूरू जी की धुणि

गोरखनाथ का नाम पार-धुणियों की सेबा
गुरु जो की सेवा करी-मिली जाणि मेंवा
चार खुंट धुणि तब चार जोड़ा इनण ।
जागन्ता दियेड़ीं जागी-तपन्ता पें धुणि
बड़ी भारी सेवा भै पै जैल करी पाई ।
ध्यानों पार बैठी जाणि गुरु जो का भाई
जैल धारी शको जब गुरु पार ध्यान ।
गुरू भक्ति शैज नाथी-कठिन छ काम
जागन्ता दियेड़ि जैगै धुणि धप्कनी ।
गुरू जी कि बात अब सब लिया सुणि
मन्दिरों में जोगियों का बाजेंछ पें चिम्टा।
भक्त पार भैटी रनी जोगी- जस निल कंठ
बावन बाजा बाजनी पें धौसि का शब्द ।
आलख आलख तब जोगियों का बोल-२
तै बखत बाजनी पें ढोल बिजैसार ।
चार घड़ी चौघाना बाजा बार घड़ा में ध्यान
गुरू का जो भक्त भया ध्यानों बैंठो रनी ।
तै बखत गोरखनाथ अवतार हुणि
जोगी भेश पार तब-आलख जगोनी ।
धन-धन गुरू तुम गुरू भगवान
भक्ति पार भक्तों की वड़ी भारी ध्यान ।

सांचा मन तनैलै पै जो सेवा करला
गुरू नोरखनाथ तब फुल बरसाला ।
मानव का बदन में अवतार हुँणि
जै की जसी धाद मै पै उसै फल दिणि
चम्तकार गोरखनाथ आज लै देखौनो ।
बिभूती का गोला गुरू आज लै पैरनी
शक्ति बांन गुरू छैं यों गुरू गोरखनाथ ।
अघीनै की आव तुम पुरी सुणा बात
रीती पैं बरीवाज हुंणि अपण अपण ।
पहाड़ा का रीवाजों में येतीं कै लेखण
देबों का पे देव भया गुरू गोरखनाथ ।
दुखियों कौ आज तब गुरू दिनी साथ
धुणियों की सेवा करनी छैमहेण छमासी ।
बैस दिन बैसो बैठीं बार महिना बारमासि
नोदिना नोवरात हुंणि साल भरी सब ।
दिन रात ध्यानों पार जो भक्त तब
कुमाऊं गढ़वाल सब पर्वत पहाड़ ।
गोरखनाथ की महिमा छ घर-२ पर
चरणों में हाथ जोड़ी में सेवा करनों ।
गुरू ज्यू की विन्ती आब अघीन लेखोनों

–तर्ज बिन्ती में–

नो० गुरु गोरखनाथ आदेश-आदेश शब्द के साथ नमस्कार स्वीकार करते थे आज भी धुणियों में गुरु के भक्त आदेश२ के साथ वीभूति पैरते हैं। आदेश–२

आदेश आदेश तब बाबा महारजान के राजा–२
गुरु गोरखनाथ ज्यु तुमरो नाम लिनों ।
जिमिका जिमिदार छा भूमिका भूम्याव छा ।
तब बाबा महारजान के राजा ॥
आकाश में इन्द्र राजा पाताल बैसिङ्गी नाग
नौ खण्डा धरती में तुमौरो नाम छ ।
नील कण्ठा हिमालों ऊंची कैलाश में
अठासी सौ तीरथों में नौवासी सौ गंगा ।
तब बाबा महारजान के राजा यशकारो
देव तुमारो नाम लिनों त्यैंतीस कोट में ॥
ढोटी गड़ भागालिंग पशुपति नाथ में
ब्रह्मा बिष्णु शिव सहित राम हनुमान ।
तुमारो नाम लिनों गुरु गोरखनाथ
बाबा महारजान के राजा यशकारी देव ।
पूरब खण्डा पून्यागिरी उत्तर में जोला
मुखि में तुमर नाम छ बाबा महारजान ।

के राजा — जागेश्वर बागेश्वर में
तुमरो नाम छ बाबा महारजान के राजा
हरीं हरिद्वार बद्रीकेदार गंगा सागर में
गबो काशी माया मथुरा म चार दिशां।
में तुमर नाम छ झांकर धूरी जागनाथ
व्यान धुरो पखाँन धुरी लोंव चुली।
लुबा खाम मैं तुमरो नाम छ बाबा
महारजान को राजा यशकारी देव छा
गंगा सागर गंगा हल्वाँ में प्रयागराज
पशुपति नाथ मे तुमारो नाम छ।
नो खण्ड धरती में तीन लोक में
चौद भवन तुमारो नाम छ बाबा।
महारजान के राजा गुरु गोरखनाथ
चार खुट धुणि चार जोड़ा इन्नण।
जागन्ता दो येड़ी तप्पता धुणि जागी रैंछ
तव बाबा महारजान के राजा जसकारी।
नमंना का धनो नमना फिरोंछा बाबा
येद गुरु गोरखनाथ तुमर नाम लिनों बाबा
अजमत का पुरा करामात का पुरा छा
बाबा महारजान के राजा यशकारी छा।

नाथ लोगीयों में गुरु गोरखनाथ तुमारो नामछ
तब बाबा महारजान के राजा ॥
जस कारी नमना का धनी छा बाबा
राम कृष्ण ज्यु की द्वारीका में तुमरो नामछ
गुरु गोरखनाथ नाथ पन्थी छा बाबा
महारजान के राजा गुरु तुमर नाम छ
तुमारा गुरु मत्स्येद्रनाथ ज्यु गुरु भै
चन्द्रगिरी गांब में तुमरी जो जन्म भूमि ।
बतोणि तब बाबा महारजान को राजा
सूर्य पुत्र लें तुमों थें कनी बाबा ।
गुरु मत्स्येद्रनाथ ज्यु जब सरस्वतो
नामें की अपुत्री स्त्रो कें सूयै मंत्र द्वारा ।
अभिमन्त्रि बिभूती दे छ तब बाबा
महारजान के राजा सरस्वती स्त्रीलै ॥
तौ बिभुति गोबरा का गड में डाली दी
अवेद बाबा बार बरस हैगई गोबरा का
गड्ड भितेर तब बाबा महरजान के राजा ॥
बार बरस में तुमारा गुरु मत्स्येद्रनाथ
वापिस चन्द्रगिरौ गांव में अंगइ ॥

बाल्य अवस्था में तुमों कें गोबर का गड्ढ
भितेर बटी तुमारो गुरु लै निकाली हाछा
तब बाबा महारजान के राजा आज
यककारी देब छा गुरु गोरखनाथ ॥
तुमारो यश आज तीन लोक में फैली रा
तब बाबा महारजान को राजा नमन का धनी
अवेद बाबा गरू शिक्षा जो तुमोकें
मिलन लागी रैछ गुरू भक्ति तुमलै ॥
लागी रछा तब बाबा महारजान के राजा
गुरू शिष्य जगन्नाथ पुरी यात्रा हुंणि
बाट लागि गछा भूमण्ड भ्रमण करन फैगछा
जाते-जाते तुमोल कनकगिरी स्थान ॥
में जो तमोल धुणि रमें है छ तब बाबा
महारजान के राजा गुरू भक्ति में लागी रछा।
तुमारा गुरू मत्स्येन्द्रनाथ तुमरी भक्ति को
जो परीक्षा लीनारई तब गुरू गोरखनाथ
तूमारो नाम छ बाबा महारजान के राजा
यशकारी देव छा नमना का धनी गुरू ॥

येद—बाबा गुरु जो शिष्य कें भिक्षा
जो मागनै कि आज्ञा दिन लागी रई तब ।
बाबा महारजान के राजा गुरू की आज्ञा
पै बेर गुरू गोरखनाथ तुम जो भिला
मागण हुँणि गों-गों में आलख जगोनारछा ।
गुरू घर घर बटी जो भिक्षा लै गछा ।
तब बाबा महरजान के राजा तुमरी
भक्ति देखि बेर तुमरा गुरू मत्स्येद्रनाथ ।
अती पसन्न हैगी गुरू गोरखनाथ ज्यू
अब तुमरा गुरु तुमोंकें सब शास्त्र विद्या ।
बतोंण लागी रई-तब बाबा महारजान के राजा
तन्त्र मंत्र बावन विद्या जो तुमोंकें बतौनी ।
चारों वेद, चौदह शस्त्र हजारों सिधियां
जो तुमोंकें बतौण लागी रई तब बाबा ।
महारजान के राजा मृत संजीवनी सावरी
विद्या अठारह पुराण जो तुमोकें ग्यान ।
है गई तब बाबा महरजान के राजा ।
श्रीराम हनुमान, कालिका, नन्दा नृसिंह ।
बैताल गणपति, सूर्य बावन बिट शबै
देव ईश्वर अवतार भूत, पिचास ।

राक्षस बीर भद्र शिबगण सब देबियां
त्यैंतीस कोट देवताओं सब विद्या ।
जाणन फैंगछा तब बाबा महारजान के राजा
अजमता का पूरा करामात का पूर बणि गछा
गुरू गोरखनाथ चार दिशाँ चार गासो
मरछा कें लागेंछ कें नैलागनी ।
पुरूब का पहाड़ों में जो तुमारो नाम छ
बाबा महारजान के राजा नील कंठा हिमाल
नन्दन की बैंराठ में कंनखल में
महामंडेश्वर अलख-नन्दा किल्केश्वर ।
गोपेश्वर कमलेश्वर रुद्र प्रयाग के
कोटेश्वर बिमाडेश्वर ककलेश्वर ।
गुरु गोरखनाथ तुमारो नाम छ बाबा
महारजन के राज ऊंचा गढ़वाल में ।
काली कुमांऊ में अल्मोड़ा हाट में ।
नैनीताला का पहाड़ में तुमरो नाम छ
गुरु जो तुमौकें पूरा ग्यान पूरा ध्यान बताई
गई बाबा महारजान के राजा तब ।
सांचा गुरु का लाल छो नम्न का भोगी
तब बाबा महारजान के राजा ।

तुमारा गुरु लै जो तुमोकें पूरा ग्यान शिक्षा दिहैछ
तब बावा महारजान के राजा ।
अब तुमरा गुरु मत्स्येन्द्रनाथ लै आज्ञा दी हैछ
गुरु गोरखनाथ तब तुम अपणि चम्तकार ।
देखौन फैगछा तब बाबा महारजान के राजा
बिभूति का बालक जो जीवत बणां हाला ।
तैं बालको को नाम तुमोलें गहीनीनाथ धारौ
बाबा महारजान के राजा अज्मती करामाती
सतकारी देव छा नमना को धनी
नमन फिरौछा बाबा गूरु गोरखनाथ ।
तुमारौ नाम छ बाबा महारजान के राजा
गहिनीनाथ अबतार भजन नारायण कै ।
अवतार लै बतौनि तब गुरु गोरखनाथ लुमारौ
नाम छ बाबा महारजान के राजा ।
येह-बाबा अघीन कै आब जो तुम चली गया
जाते—२ बद्रीकाश्रम में पौची गछा ।
वां तुम शिवजी का ध्यानें लागी गछा
तब बाबा लुवा का काँटों में ठाड हैबेर ।
कठिन तपस्या करनाछा तब बाबा महारजान
के राजा तुमरी कठिन तपस्या देखी बेर ।

शिवजी लै प्रसन्न हैगई बाबा यशकारी देव छा
अब तुमोकें शिवजी लै आशीर्बाद दोहाछ।
तब बाबा महारजान के राजा अजमत का
पूरा करामात का पूरा बणि गछा बबा।
अधिन कै भूमण्डल भ्रमण करन फैगछ
तीर्थ यात्रा हूं नैरेछें गंगा अस्नान हुनारी।
चलते-चलते पोंची गछा हेलाबपट्टन नगर में
तैबखत का बोच में तुम्री जो भेंट।
नाथपन्थी सिद्ध योगी कानीकानाथ
ज्यु क दगाड़ा तूमरी भेट भैछ बाबा।
महारजान के राजा गोपीचन्द्र राजा का
दगाड़ा लै तुमरो भेंट बारता भैछें।
शत गुरु आदेश गुरु यश कारी देव छा।
कानीकानाथ का गुरु जालन्धरनाथ का
दगड़ा गुरु गोरखनाथ तूमरी भेट बारता।
भैछें - अजमती करामती गूरु महारजान के
राजा निधनी कै घन दिनारछा
तब बाबा अपुत्री कै पुत्र दिनारछा।

तब गुरू सच्चा गूरू का लाल छा गुरु गोरखनाथ

तै बखत का बीच में तुमों कें यो मालूम ।

नाथ्यों गुरू मत्स्येन्द्रनाथ कां हुनैला यश कारी देव

अब तुमौकै तैबखत वतौण लागी रई ।

गुरू जालन्धरनाथ कनी तुमारा गुरु

त्रिया राज मे जारी तब बावा महारजान

के राजा — गुरू गोरखनाथ आब

जौअघीन कै तुमारा-भ्रमण चली गई

अपण गुरु की खोज में लागी गछा ।

जाते-जाते त्रिया राज में पोंचो गछा

बाबा महारजान के राजा अजमती करामती ।

आब जो त्रिया राज में तूमोल धुड़ि रमें हैछ

येद-बाबा तैबखत, राम-हनुमान दगाड़ा ।

लै भैट बारता हुंन लागी रैछ तब बाबा

महारजान के राजा-साँचा गूरु का लाल छा

रानीमैनाकिनी लै, तुमारा दर्शन करन लागी रई

जाँ तुमार गुरु मत्स्येन्द्रनाथ छीया ।

तब बाबा गुरु की शक्ति भक्ति महारजान के राजा

आब रानो मैनाकिनी जो तुमरी सेवा में
लागी हेछ चरण छु नारछ हाथ पात जोड़ी ।
दण्डोवत प्रणाम करन लागी रैछ
तब बाबा महारजान के राजा यशकारी ।
छा—नमन का भौगी छा अब तुमौ कें
तुमारा गुरु मत्स्येन्द्रनाथ जो बोल ।
बुलानी चेत मछिन्दर गोरख आया
कनी तैबखत का बीच में गुरू ।
शिष्य कें भेट बारत भैछ तब बाबा
महरजान के राजा बार वर्ष में जो गुरू ।
शिष्य की भेंट हुन लागी रैछ तब गुरु
नमना धनी छा—नमन फिरोछा ।
तब बाबा महारजान के राजा यशकारी देव छा
अवेद बाबा तैबखत का बीच में ।
गुरु गोरखनाथ तुमारा गुरु, गुरु मत्स्येन्द्रनाथ
तुमारो भाई मिननाथ तीन मूर्ति त्रिया राजी बटी
वापिस अैगछा तब बाबा आपणि ।
भक्ति की शक्ति जो तुमौलै दिखा हैछ

आते—आते अंगछा तैलंग देश में
गोदावरी-संगम में जो अस्नान करन लागी रछा
तब बाबा महारजान के राजा गुरू गोरखनाथ ।
नागनाथ—बैजनाथ तीर्थ का लें दर्शन
हुन लागी रई तब बाबा तैबखत का बीच ।
मे गर्भगिरी जंगल में बाल्मीकी आश्रम
मे जो तुमौले घुणि रमें हैछ बार —
बरषै को जो भक्ति हैरैछ अठार ।
घड़ी का ध्यान हैरई तब बाबा महारजान के राजा
येहू--गुरु गोरखनाथ तुमारौ नाम छ ।
तै आश्रम मे गर्भगिरी स्थान में
भण्डारा जो करनारछ अजमत चलोनोरछा ।
आपणि कारामत चलौछा लाखों ऋषि मुनी
साधु-- संयासि-- बैरागी योगी तपस्वरी ।
इकट्ठा हैरई सब भोजन पानारई तब बाबा
चार दिशा चार गासी मारना रछा ।
जे चीजै की कमी हुनलागी रैछतौ चीज त्यार हैजनारौछ
तब बाबा महारजान के राजा गुरू गोरखनाथ ।

तीन लोक का साधू संन्यासियों जो तुमौलै
बुलैहाली — उपरिक्षवसू लै तुमौलै ।
तैं भण्डार में सामिल करी हाली ।
तब बाबा महारजान के राजा यशकारी देव छा
अब बाबा तां बटी विदा हैबेर बाट लागी गछा ।
अघीन चली बेर अब तुमौ कें जो
भलूंहरी दगड़ा लै तुमारा जो भेंट ।
बारता है गछ आब जो चौरंगीनाथ लै ।
तुमों कें मिली गया-तब बाबा महारजान
के राजा- रेवती रानी का पुत्र धर्मनाथ ।
दगाड़ लै तैंबखत जो तुमरौ भेंठ बारता हैगे
तब--आज तुमारौ नाम गुरु तीन लोक ।
में फैलरा तब बाबा महारजान के रांजा
गुरू तुमारौ भ्रमण जो नैपाल पमुपतीनाथ ।
में तुमारौ नामछ-गुरू गोरखनाथ ।
गोरखपुर में लै जो तुमौलै धुणि रमेंछ ।
बार बरसै की तपस्या करी अठार
घड़ी का ध्यान तैं बखत का बिच में ।
अजपाल नाथ योगी दगाड़ लै तुमारौ
भेंट बारता भेंछ-तब बाबा महारजान के राजा

हिगलाज पर्वत में जो तुमौलै धुणि रमें हैछ
कठिन तपस्या करीछ तब बाबा यशकारी देव छा
तां बटी आब तुम, अघोन के जो बाट लागी गया
गाधार देश में जो सुलैमान पर्वत में लै ।
छै महिण की छैमासो —वार बरसै की
बारमासी--तुमार जो ध्यान हैरी तब बावा ।
महारजान के राजा गुरु गोरखनाथ तुमारो
नामलिनों — यशकारी देव छा बाबा
तब बाबा महारजान के राजा तै वखत ।
का बीच में, तुमों के मिलो गया
अजपानाथ का शिष्य जो कठिन तपस्या ॥
करनारई तनार दगाड़ा तैबखत का बीच ॥
में तुमरी भेंट बारता भैछें गुरु गोरखनाथ ।
नागा निरवानी ठाड़ा तप्वेश्वरी जोगी
की जो जमात चलो रैछ तब बाबा ॥
महारजान के राजा नम्न का धनी छा
बाबा नमन फिरोनाछा नमना का भोगी छा ।
गुरु गोरखनाथ तुमारो नाम लिनो बाबा

पवन नाथ लै जो तुमारा शिष्य छैं
आब अघीन कै तुमारा जो भ्रमण ।
चली रई—बाबा महारजान के राजा ।
शालीपुर — स्यालकोट में ज्वालादेवी
को लै न्यौत स्वीकार करन लागी रछा ।
ताँ बटी लै जो तुम बाट लागी गछा,
चलते- चलते धवलागिरी पर्वत में
धुणि जो रमै हैछ—हजारों शिष्यों कें जो
दीक्षा योग मार्ग बतौण लागो रछा
बाबा महारजान के राजा सांचा गुरू का लाल
आब अघीन कै, नीलकन्ठा नैपाल भ्रमण ।
करनारछा अजमत का पूरा करामात का
पूरा तब बाबा गुरु गोरखनाथ देव छा ।
तै बखत का बिच में तुमौल जो
नैपाल मैं अपणि अजमत चलेछ बाबा ।
महारजान के राजा बसन्त सेना जो
तुमौलें रातो रात तैयार करी है छ ।
तुमरी जो अजमत चलनारैछ बसन्त सेना ।
नैपाल का राजा महीन्द्र देव की फौजा का
दगाड़ा लड़ाई लड़नारई ।

तब बाबा महारजान के राजा तैवखत का

बिच में बसन्त देव नंपाल की राज ।

गद्दी में बैठगया – तब बाबा महारजान के

चार दिशां में तुमरो नाम छ पूरब, पछिम-उत्तार

दक्षिण तुमारो नाम छ बाबा गोरखनाथ ।

आब अघिन कै जो तुमारा भ्रमण

चलो गया ऊंच—ऊंचा हिमालों में बाबा ।

तै बखत का बिच में लाखों साधू महन्त

सन्यासी-बैरागी तपेश्वरो – नागा निर्वानी ।

तब – बाबा महारजान के राजा यश

कारी देव छा—नमना का धनी छा ।

चार बेद चौदह शास्त्र तुमार जो

चार पहर में चलनी बाबा महारजान ।

के राजा चार खूंट धुड़ि चार

जोड़ा इन्नम तत्नता धुणि जागन्ती ।

दियेड़ो तब बाबा महारजान के राजा

तब गुरू गोरखनांथ जी तुम हमारा इष्ट छा ।

हमनर छों तुम नाराथण छा बाबा महारजान केराजा

नो० आज गुरू गोरखनाथ भगवान माने जाते है। भारत में तो मानते ही हैं पूरे विस्व में गुरू की महिमा फैली है। उत्तर प्रदेश के कुमाऊं गढवाल पूरा पर्वतीय भाग गूरू गोरखनाथ की सेवा धुणियों में करते है गांव-गांव में मन्दिर बनाये जाते हैं। सामोहिक तौर पर पूरे गांव वाले मेल मिलाप से गुरु की सेवा भक्ति में जुटे रहते हैं गोरखनाथ यौगी आदेश-आदेश शव्द के साथ नमस्कार स्वीकार करते थे आज भी गुरु के भक्त आदेश आदेश के नाम के साथ बिभूती पैरते हैं। गुरु आज के युग में मानब के बदन में ईश्वर के रुप में अवतार होते हैं धुणियों में जब भक्ति में सेवक भक्ति पर हैं तो वहां जागा लगाई जाती है। ढोल बिजैसार बाजों के साथ बिनती भो कही जाती है ढोल बजाने बाला चाहे कोई भी ग्यान वाला आदमी हो इस पर कोई छोटा बड़ा का सवाल नहीं आता क्योंकि गुरु भगवान के नाम से ये भक्ति है गूरू तो सब का भला चाहते हैं। गाई का भला—माई का भला सब का भला होता है।

तर्ज—नाचणि डंगरियों का बखांन

शत गुरु आदेश शत गुरु आदेश-आदैश
आदैंश पोंची जो भया चारखूंट धुनि हुंनी।
चार जोड़ा इन्नण हुंणि-तप्पता धुणि भाया
जागन्ती दोयेड़ी सोर्वना दुलेंची हुंनी भया।

आदेश पोची जो भया—गुरु त्यार हाथों बव

भरीजो भया खेले लगैगछा य जोगी कें भया ।

आदेश पोंची जो तमा घोसि बीजैसार हुंनो ॥

आदेश पुजी जो चार दिशां हुनी

भौलौ हैजो भया, ये सुकीली शाबा कौ ॥

दुःख हरा जो रोग कटी जो पै देधें

भाया—चार घड़ी चौधान बार घड़ी

मेंधान में जानों भया धद्या की धाद

फिरद्या की फिराद देखनो भया ॥

चाली चुकाये जन, बाजी मारी येजन

में बाट भूलुल तु जुम्मेदार, भये भया ।

मोत्यों दानी कौ , खेल खेली जानों

जसौ देखुलौ भया उसें बतै जौल ॥

में जोगी छों भया मेरी त खाक चलेंछ

खाक लाख बणि, जाली म्यार धरमी भया

पें भौल हैं जो-भोल है जो म्यार भाई लौको ॥

लागी जालौ माई को शत बाबु को

धरन भौल है जो में जनों ऊंची कैबश हुँनी ॥

म्यारा धरमी दासो

आदेश–आदेश पुजो जो भया म्तार गुरु
मत्स्येन्द्रनाध—गुरु हरीनारायण हुँनी ॥
आदेश—पुजो जो भया राम हनुमान
शिव–नील कन्ठा हिवालों मेरी आवाज
पुजो जो म्यारा धरमि दाशै मेरो आवाज ॥
पुजो जो भया ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर
हुणो धरमी दास शत गुरु आदेश ।
आदेश पुजो जो भया तीन लोक
चौद भवन हुनी अठासि सौ गंगा हुनी ॥
नौवासो सौ तीर्थं हुनो भया दासो
आदेश पुजो जो सैमा द्यौहुँनी ॥
झांकर धुरी व्यान धुरी पखान
धुरी जागेश्वर–वागेश्वर जागनाथ ॥
लोव चुली लुआखाम हुनी आदेश
पोंची जो भता धरमी दाम ॥
में जानों जोगी की जमातसित
भौल हैंजो—भौल हैजो जैकीं ॥
जसि मन्साछ पूरन बनी जो भया
फुल बाड़ो सबों की फुलिया रै जो भया ।
गोठ गाई चुला माई बाल गोपाल
किछि किर मली जिव सुखि रैजाना भया ।

नोट–अब पहाड़ों के सभीं देवी देवताओं को संध्या की तर्ज मे लिखा जायेगा जब किसी के घर में जागर या जागा लगती है तो पहले-२ संध्या गाई जाती है ।

तर्ज—संध्या

के संध्या भुलीं अँगे, पूरूब खण्डा बटी-२

संध्या भुलौ अँगे रामा नीला कन्ठ हिवाल ।

संध्या भुली अँगे आकाश पाताल

नौखण्डा धरती माजा राम कृष्ण की द्वारिका बटी संध्या भुली अँगे ।

पंचबटी माजा गंगा जें सागरों मान सरोवरों बटी—सतोई - सागरों बटी ।

संध्या भुली अँगे नारैंना हो–२ भुली अँगे — भुली अँगे संध्या ।

भुलीं अँगे छा भगवानों का द्वार रूमनी झुमनी, संध्या भूली अँगे छ ।

गढ़—गंगा—भागीरथी गंगा हल्वा बटी जमुना गंगा किनारों बटी–संध्या ।

भूली अँछा, हो नारैना-२ नारैना हो गैला मैला पातलों बटी गैली मैली गजारों बटी

के संध्या भुली अँगे तीन लोक
बटी– राज ज्यू की आयोध्या कौरवों
की गँगाल बटी हो नारैना - २ हो
सप्तारे सिन्धु पचारे नहा सुनोरा लंकाधाम
हरी हरिद्वार बटौ–गुरु का द्वारों बटी ।
संध्या भूली अँछ धन, धन भगवानों–२
पूरवा का रथ पश्चिम न्हैं गया हो
पछिमा का रथ पाताल न्है गया हो
रुमनै–भुमर्नें संध्या – सँध्या भूली ।
अँछा – सँध्या का टैंम नारैना जी
रघ न चलौना – बुड़ा न पीत्योंना ।
बाला न रो औना – सुई न चलोना।
भाड़ न भाड़ना – संध्या का पें टैंम--२ ।
दीयेड़ी जगोनो–संध्या जै पे गानी भगवान
संध्या का जै टैंम देवों कें न्योंतनी ।
तुमों कें सुनों नौ राम अवतार धन-२ देबो
कृष्ण अवतार ब्रह्मा अवतार ।
बिष्णु अवतार चोद शास्त्र हो, हो
संध्या का बखत – का बखत पन्च नाम देघा ।
देव बणि जाया हो -- हो २ ।

नोट—पहाड़ के सभी देवी देवताओं को सामिल बिन्ती जागर या जागा लगती है या धुणियों में भी देवताओं को न्यौता देते हैं यहां पर सभी के नाम की बिनती लिखा जाती है ताकि सभी देवताओं का नाम आवै सभी नाचे दुखिया का दुख हरें।

—सभी देवताओं की बिनती—

तब बाबा महारजान के राजा-ये संध्या
का बखत में, तुमरो नाम लिनो गुरु ॥
भुमिका भुम्याव छा बाबा थाती का थत्बा
तब बावा महारजान के राजा नमन का।
धनी नमन का भोगी जसकारी छा बाबा
तुमारो नाम लिनों पन्चै नाम देबो ॥
तब बाबा महारजान के राजा ॥
आकाश इन्द्र राजा पाताल बेसिङ्गीनाग।
नौ खण्डा धरती में, तुमारो नाम छ
तब—बाबा महारजान के राजा ॥
गया काशी माया मथुरा में तुमारो नामछ
हरी हरिद्वार वद्रीकेदार चार धाम में ॥
चार दिशाँ में तुमारो नाम छ गुरू
तब बाबा महारजान के राजा अजमत का

पूरा करामत का पूरा तुमारौ नामछ ॥

ऊंची कैलाश में ऊंचा हिवालों में

गैला मेंला पातलों में तुमारौ नामछ तब ॥

बाबा महारजान के राज। यशकारी देव

प्रयाग पशुपती नाथ गंगासागर में तुमारौ नामछ

त्यतींस कोट में तुमारौ नाम छ बाबा

महारजान के राजा पूरब खण्डा पुन्यागिरो ॥

उत्तर जोला मुखी अठ सि सौ तीरथों

नोवासी सौ गंगों में तुमारों नाम छ गुरू ॥

जागेश्वर बागेश्वर सिताबनी दुनागिरो

म तब बाबा महारजान के राजा ॥

झाँकर धूरी जागनाथ— जागेश्वर

ब्यान धूरी पखांन धूरो लोव चुली लुवा खाम ॥

तीन लोक नों भवनों में तब बाबा

महारजान के राजा तुमरौ नाम छ ॥

दुदाधारो गोरिया तुमर नाम लिनो दैंबौ

बाल चिरी इन्साफ कर छा दुदी में कौ बाल छाटछा ॥

इन्सापा देवछा तब बाबा महारजान के राजा

तुमरौ नाम लिनों अजमतो करामती छा बाबा ।

चित्रशिला रानीबाग—नलदमन्ती भीमताल

नैनोताल-अल्मोड़ा नील कंठा हिमांलों

नन्द की बैराठ में कनखल महांमडेलश्वर

अलख, नन्दा किल्केश्बर गोपेश्वर ।

कमलेश्वर में तब बाबा महारजान के राजा

तब बाबा यशकारी देवछा गुरु नमना का धनी

रुद्र प्रयाग के कोटेश्वर बिमाडेश्वर ककलेश्बर ।

गोईल्ला लाकुडा नंगपाणि भूत परी भवानी

तब बावा महारजान के राजा तुमारौ नाम छ

सोल सौ सिन्यासो बार सौ बैरागी । १.

नांगा-निरवाड़ी ठाड़ा तपेश्वरी तव बाबा

महारजान के राजा येद गुरु नमन का धनी

नरसिंह निरंकार-कल विष्ट कलूवा बोर

भोमेश्वर - नल दयमन्ती तब बाबा-

महारजान के राजा सद कें सादछा ।

अबद बादछा निधनी कें धन दिछा ।

अ पुत्री कें पुत्र दिछा दुखिया को दुख हरछा

रोगिया को रोग हरछा भुखा को पेट भरछा

तब बाबा महारजान के राजा नमन का भोगी

नमन फिरोंछा यशकारी देब छा बाबा ।

हरू-सेंमा गेली समुन्द्र में लिंग देब ।

कालरुण—पंचा चुली धूरा देवी झाला

माली—पंच देंब पिनाकी देव--तब बाबा ।

महारजान के राजा बोक साड़ी विद्या

चौबाट की धुल साद्छा नमन का

भागो तब बाबा महारजान के राजा

वासुदेवेश्वर सिद्धा मोटेश्वर महादेव ।

सन्त महापुरुष तपस्वी आश्रम ।

द्रोणागिरी भगवती सम्पूर्ण सिद्ध सवंदा ।

सागर तीन लोक चौद भवन अठासि

सौ तीर्थ में तब बाबा महारजान के राजा-२

येद—बाबा महारजान के राजा

पूरब, पश्छिम, उत्तार, दक्षिण में तुमारौ नामछ

बाबा महारजान के राजा सत्कारी ।

छा गुरु नमन का भोगी नमन

फिरोछा नमन जें छ अठार कोस

बदी जें छ बार कोस तब बाबा ।

महारजान के राजा हमारा इष्ट छा

हमरी भौल करिया इश्वरी दैणि हैजाया ॥